International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(5): 27-28

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(5): 27-28
© 2015 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-06-2015
Accepted: 23-07-2015

पिंकी तिवारी
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग,
डी. एस. बी. परिसर,
कुमाऊँ विष्वविद्यालय, नैनीताल

Correspondence
पिंकी तिवारी
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग,
डी. एस. बी. परिसर,
कुमाऊँ विष्वविद्यालय, नैनीताल

संस्कृत साहित्य में आधुनिक कवि डॉ. राधेश्याम गंगवार का योगदान

पिंकी तिवारी

देववाणी के देदीप्यमान नक्षत्र, भारतीय संस्कृति के उपासक डॉ. राधेश्याम गंगवारजी विविध विषयों पर तीस से अधिक लेख एवं शोध–पत्र संस्कृत की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। अनेक राष्ट्रीय एवं अन्ताराष्ट्रिय शोधसम्मेलनों, गोष्ठियों और कार्यशालाओं में अपने गवेषणापूर्ण शोधपत्र प्रस्तुत करके संस्कृत साहित्य जगत की सेवा की है। संक्षेप में इनके द्वारा प्रकाशित प्रमुख लेखों एवं शोध–पत्रों का विवरण इस प्रकार है–

क्र.सं.	लेख/शोध–पत्र का नाम	पत्र/पत्रिका का नाम	मास/ वर्ष
1.	पर्यावरणसंरक्षणे संस्कृतसाहित्यस्य योगदानम्	भारतोदयः(मासिकम्)	फरवरी,२००२
२.	उत्तरांचलम्	भारतोदयः(मासिकम्)	फरवरी,२००३
३.	संघे शक्तिः कलौ युगे	वाक् (पाक्षिकम्)	जनवरी,२००३
४.	उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः	वाक् (पाक्षिकम्)	फरवरी,२००३
५.	भाविभद्रं हि जीवितम्	वाक् (पाक्षिकम्)	अगस्त,२००३
६.	अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्यम्	वाक् (पाक्षिकम्)	सितम्बर,२००३
७.	कृधी न ऊर्धान् चरथाय जीवसे	संस्कृतमंजरी (त्रैमासिकी)	जु.–सि.,२००३
८.	श्रेयसि केन तृप्यते	भारतोदयः(मासिकम्)	नवम्बर,२००३
९.	सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ते	वाक्(पाक्षिकम्)	दिसम्बर,२००३
१०.	भारतीयचिकित्साविज्ञाने वनस्पतीनां महत्त्वम्	पारिजातम्(मासिकम्)	दिसम्बर,२००३
११.	अभिनवोत्तरांचले संस्कृतम्	आन्वीक्षिकी(त्रैमासिकी)	दिसम्बर,२००३
१२.	वाल्मीकिरामायणे पर्यावरणचेतना	अभिनन्दन भारती	मार्च,२००४
१३.	महर्षिर्दयानन्दः	वाक् (पाक्षिकम्)	अप्रैल,२००४
१४.	राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्	वाक् (पाक्षिकम्)	मई,२००४

महाकवि राधेश्याम गंगवारजी ने साहित्य साधना में सतत निरत रहते हुए विभिन्न विधाओं में अनेक ग्रन्थों की रचना की है। इनकी अद्यावधि प्रणीत संस्कृत कृतियों का संक्षिप्त परिचय निम्नवत् है–

१.चन्द्रगुप्तचरितम्

यह महाकाव्य कृति भारत के महान् सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य के अद्भुत साहस, पराक्रम तथा त्यागमय जीवन पर आधारित है। इसमें कवि ने महापद्म नन्द वंश के अन्तिम शासक धनानन्द के अत्याचारों से पीडित, भारतीय जनता के कष्टों से चिन्तित, राष्ट्रभक्ति से ओत–प्रोत चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा मातृभूमि को विदेशी आक्रान्ताओं–सिकन्दर तथा सिल्यूकस से मुक्त कराने के लिए किये गये कार्य कलापों का आधार ग्रहण करके नायक का चरित्र चित्रण किया है।

महाकाव्य में पन्द्रह सर्ग हैं। चन्द्रगुप्त मौर्य धीरोदात्त नायक के उन सभी उदात्त गुणों से विभूषित हैं । जिन्हें काव्य परम्परा में शास्त्रकारों ने परिभाषित किया है। ऐतिहासिक इतिवृत्त को महाकाव्य के अनुरूप उदात्त और व्यापक बनाने के लिए कवि ने प्रकृति, नगर, अभिषेक और युद्ध वर्णन के सजीव दृश्य प्रस्तुत किये हैं। वीर रस प्रधान काव्य में न केवल चन्द्रगुप्त के शौर्य का वर्णन है। प्रत्युत पुरु तथा सिकन्दर प्रभृति खलनायकों के पराक्रम और रण कौशल का सुन्दर चित्रण है। प्रसन्न वैदर्भी रीति में रचित इस काव्य में सर्वत्र भावसौन्दर्य, वर्णनमाधुर्य, पदलालित्य, अलंकारचारुत्व और अल्पसमासत्व के दर्शन होते हैं। वस्तुतः सरल शैली में रचित यह उच्च कोटि का महाकाव्य है।

कवि के शब्दों में

रक्षाव्रता भारतमातृभूमे र्लोभान्न मोहान्न भयान्न कामात् ।
न जीवितस्यापि हिताय लोके कदापि धर्मं हि परीत्यजन्ति।।[१]
सर्वात्मना सावहिता महिपाः सदाप्रजारञ्जनकर्मदक्षाः ।
धर्मेण धैर्यण धिया व्रतेन यज्ञेन दानेन भवन्ति वंद्याः ।।[२]

२.स्वामिश्रद्धानन्दचरितम्

यह महाकाव्य भारत में वैदिक शिक्षा पद्धति के प्रचारक, राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के नायक, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के संस्थापक, शुद्धि आन्दोलन के प्रवर्तक, आध्यात्मिक विद्वान् शिक्षाविद् स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर आधारित है। सन्त चरित पर केन्द्रित इस विशालकाय महाकाव्य के अभी केवल छः सर्ग ही प्रकाशित हैं।
कवि के शब्दों में–

श्रद्धामयानन्दकथा महात्मनः प्रसन्नकाव्येन सतां सचेतसाम्।
प्रसादयन्ती हृदयानि धीमतां पविष्यते मे गिरमाविलामपि ।।[३]

३.संस्कृत निबन्ध सुधा

यह परास्नातक परीक्षार्थियों के लिए उपयोगी ५० निबन्धों की प्रौढ रचना है। सात भागों में विभाजित इस कृति में शैक्षिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, वैदिक, शास्त्रीय, सामाजिक, राष्ट्रिय और प्रकीर्ण निबन्ध समाहित हैं।

४.संस्कृत गीत लता

सन् २०००५ ई. में उत्तर प्रदेष संस्कृत संस्थान के वित्तीय सहयोग से प्रकाशित यह कृति भक्ति, राष्ट्रिय, सांस्कृतिक तथा लोक गीतों का ललित संकलन है।
कवि के शब्दों–

मनः प्रसन्नं हृदयं सुनिर्मलं विशालमेधा प्रतिभा विलक्षणा ।
उदारवृत्तञ्च वचोहि सूनृतं क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति।।[४]

५.संस्कृत कविस्तव

यह कृति संस्कृत साहित्य में प्राचीन तथा अर्वाचीन कवियों की स्तुति के साथ उनके जीवन वृत्त तथा कृतित्व के महनीय योगदान को रेखांकित करती है।
कवि ने वाल्मीकि के बारे में इस तरह कहा है –
रामायणं सिद्धरसं प्रकामं निर्माय सीताचरितप्रधानम् ।
ततान सर्वत्र यशो महर्षिर्वाल्मीकिपादाम्बुजमानतोऽस्मि।।[५]

६.आह्वानम्

तीन भागों में विभक्त इस नीति काव्य में पाँच सौ पद्यों में ८५ विषय प्रतिपादित हैं। भुजंग प्रयात वृत्त में निबद्ध भावों की कोमलता और भाषा की प्रांजलता सहृदय विद्वानों को आह्लादित करती है। पाश्चात्य सभ्यता से भ्रमित युवकों, युवतियों को सत्कर्म की प्रेरणा स्रोत जीवन–संदेश यह कृति साहित्य जगत् को अनुपम उपहार है। वर्ष २००७ में प्रकाशित यह कृति उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ द्वारा संस्कृत बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित है।
कवि के अहिंसा के बारे में इस तरह कहा है–

समीक्ष्यात्मवत् सर्वभूतेषु सत्यं शिवं सुन्दरं सौभागं कामयन्ते।
सहायाः सहाः सर्वहिंसानिवृत्ताश्च सर्वाश्रयाः स्वर्गसौख्यं भजन्ते ।।[६]
कवि ने कर्म को सर्वोपरि बताते हुए इस प्रकार कहा है –
जना ये धने यौवने वर्तमाने व्रतेन स्मरं दुर्जयं मारयन्ति ।
सतामादृता धैर्यवन्तो महान्तो महत्त्वं परं वैभवं संव्रजन्ति ।।[७]

७.कथा विंशति

समसामयिक लोक समस्याओं पर केन्द्रित यह ग्रन्थ कवि की बीस कथाओं का संग्रह है। इनमें दया, करुणा, मानवता, संवेदना और सहानुभूति प्रायः सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। सरल भाषा में रचित ये कथाएँ कोमल बाल मन को सभ्य, संस्कृत और विकसित करने हेतु सतत प्रेरित करती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. चन्द्रगुप्तचरितम्, प्रथम सर्ग, श्लोक १२
2. चन्द्रगुप्तचरितम्, प्रथम सर्ग, श्लोक १३
3. स्वामिश्रद्धानन्दचरितम्, प्रथम सर्ग, श्लोक ४
4. संस्कृतगीतलता, क्रम संख्या–१०, श्लोक ६
5. संस्कृत कविस्तवः, क्रम संख्या–१, श्लोक १५
6. आह्वाहनम्, क्रम संख्या–७, श्लोक ५
7. आह्वाहनम्, क्रम संख्या–१५, श्लोक १०
8. संस्कृत निबन्ध सुधा
9. कथा विश्षतिः